(पृष्ठ २२ का शेष...)

अहा ! शरीर तो जड़ह्नमिट्टीह्नधूल होकर रह रहे हैं। यदि वे आत्मा होकर रह रहे होवे तो, जैसे आत्मा अरूपी है, वैसे ही वे शरीर आदि भी अरूपी हो जायें; परन्तु ऐसा तो कभी नहीं होता। इसीप्रकार लक्ष्मी भी जड़ होकर रह रही है और यह वाणी भी जड़ होकर रह रही है ह्न इसप्रकार जड़ तत्त्वों को जड़रूप रहा जानकर आत्मा को भी आत्मारूप रहा जान ह्न यहाँ ऐसा कहा है।

और जो पुण्य-पापरूप होकर रहे हैं, वे आस्रव और बंध इस जीव को दु:खरूप हैं ह्न ऐसा जान ! तथा भगवान आत्मा उनसे रहित है अर्थात् जो रागरहित होकर रहा है, वह आत्मा है ह्न ऐसा भी जान ! इसप्रकार वीतराग परमेश्वर त्रिलोकीनाथ ने जो मार्ग कहा है, उसके द्वारा तत्त्वार्थसमूह को जानकर ह्न ऐसा कहा है।

आशय यह है कि जैन परमेश्वर के मार्ग के अतिरिक्त किसी अन्यमत में तत्त्व की यह बात नहीं हो सकती। इसलिये उन जिनपति के मार्ग द्वारा तत्त्वार्थसमूह को जानकर **पर ऐसे समस्त चेतन-अचेतन को त्यागो।**

देखो ! यहाँ कहते हैं कि स्त्री, पुत्र का आत्मा परचेतन है और देव-शास्त्र-गुरु का आत्मा भी परचेतन है। अत: उनको दृष्टि में से त्यागो अर्थात् वे मेरे नहीं है ह्न ऐसा जानकर उनको दृष्टि में से छोड़ो।

देखो ! अरिहंत भगवान इस आत्मा से परचेतन हैं, सिद्धभगवान इस आत्मा से परचेतन हैं। अरे ! पाँचों परमेष्ठी इस आत्मा से परचेतन हैं। वे पर हैं; क्योंकि वे इस आत्मा के कहाँ हैं ? अत: उन समस्त परचेतन और अचेतन कोह्नरागादि पुद्गल विकारों को और देहादि पुद्गलों को दृष्टि में से त्यागो। भाई ! जो तेरे में नहीं है, उनकी दृष्टि छोड़ और जो तेरे में है, वहाँ दृष्टि कर !

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 नवम्बर, 2008	इन्दौर	शिलान्यास ढाई द्वीप
6 से 13 नवम्बर	जयपुर	सिद्धचक्र विधान
28 नव. से 3 दिस.	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	पंचकल्याणक
7 से 14 दिसम्बर	बुन्देलखण्ड यात्रा	युवा फैडरेशन यात्रा
20 से 26 दिसम्बर	फिनिक्स (यू.एस.ए.)	पंचकल्याणक
30 व 31 दिसम्बर	मुम्बई	अधिवेशन-पत्रकार संघ

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 304 अंक : 4

मोह उदय दु:ख पावै...

यह मोह उदय दु:ख पावै, जगजीव अज्ञानी।
यह मोह उदय दु:ख पावै ।।टेक।।
निज चेतना स्वरूप नहीं जानै, परपदार्थ अपनावै।
पर परिणमन नहीं निज आश्रित, यह तहँ अति अकुलावे।।
यह मोह उदय दु:ख पावै ।।1।।
इष्ट जानि रागादिक सेवै, ते विधि बंध बढ़ावै।
निजहित-हेत भाव चित सम्यक्दर्शनादि नहीं ध्यावै।।
यह मोह उदय दु:ख पावै ।।2।।
इन्द्रिय तृप्ति करन के काजै, विषय अनेक मिलावै।
ते न मिलै तब खेद खिन्न ह्वे, समसुख हृदय न लावै।।
यह मोह उदय दु:ख पावै ।।3।।
सकल कर्मक्षय लच्छन लच्छित, मोक्षदशा नहीं चावै।
'भागचंद' ऐसे भ्रमसेती, यह काल अनन्त गमावै ।।
यह मोह उदय दु:ख पावै ।।4।।

ह्न कविवर पण्डित भागचंदजी

निश्चय-व्यवहार पुद्गल द्रव्य

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 29 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

पोग्गलदव्वं उच्चइ परमाणू णिच्छयेण इदरेण।
पोग्गलदव्वो त्ति पुणो ववदेसो होदि खंधस्स ।।२९।।

निश्चय से परमाणु को पुद्गलद्रव्य कहा जाता है और व्यवहार से स्कन्ध को पुद्गलद्रव्य कहा जाता है।

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : शुद्धरूप से परिणमें तब आत्मा को शुद्ध कहा जाता है ?

उत्तर : हाँ; क्योंकि जब शुद्धरूप से परिणमें तभी त्रिकाली शुद्धद्रव्य है ह्न ऐसा भान होता है न ! परिणमन बिना भान कहाँ होता है ? अत: कहते हैं कि पर्याय की शुद्धता सहित त्रिकाली शुद्धता को आत्मा कहते हैं; क्योंकि शुद्धता की पर्याय उसका अपना स्वभाव है। त्रिकाली स्वभाव को और एकसमय की शुद्धपर्याय ह्न दोनों को मिलकर आत्मा कहा जाता है।

अहा ! आत्मा तो उसको कहते हैं कि जिसको शरीर, मन, वाणी और दया, दान, व्रतादि के विकल्पों से भिन्न भगवान आत्मा अनुभव में आता है। अहा ! स्वानुभूति में कोई विकल्प नहीं आता, उसमें तो एक आत्मा ही आता है और अनुभूति से भिन्न होने के कारण अन्य सभी भावों को पुद्गल कहा जाता है; जबकि अनुभूति सहित आत्मा को आत्मा कहा जाता है।

अरे ! सारा जगत लुट रहा है। एक तो संसार के नाम पर सारी जिंदगी पहले ही लुट रही है और उसमें यह जीव धर्म के नाम पर भी लुटता है। अरे रे ! इनका क्या होगा ? यहाँ से निकलकर कहाँ जायेंगे ? अरे ! जीव का सच्चा भाव क्या है और मिथ्याभाव क्या है ह्न यह भी इन्हें पता नहीं है।

अब कहते हैं ह्न **अन्य ऐसे व्यवहारनय से विभाव पर्यायात्मक स्कन्धपुद्गलों को पुद्गलपना उपचार द्वारा सिद्ध होता है।**

इन शरीर, मन, वाणी, इन्द्रियाँ, पैसा आदि विभावपर्यायमय स्कन्ध पुद्गलों को व्यवहारनय से उपचार द्वारा पुद्गल कहा जाता है।

कलश-४३

इति जिनपतिमार्गाद् बुद्धतत्त्वार्थजातः
त्यजतु परमशेषं चेतनाचेतनं च।
भजतु परमतत्त्वं चिच्चमत्कारमात्रं
परविरहितमंतर्निर्विकल्पे समाधौ ।।

अर्थ ह्न इसप्रकार जिनपति के मार्गद्वारा तत्त्वार्थसमूह को जानकर समस्त पर चेतन और अचेतन को त्यागो। अंतरंग में निर्विकल्प समाधि में परविरहित (पर से रहित) चित्चमत्कारमात्र परमतत्त्व को भजो।

जिनपति अर्थात् जिनेश्वरदेव, वीतराग परमेश्वर, त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर परमात्मा और उनके मार्ग द्वारा अर्थात् वीतरागी भगवान के मार्ग द्वारा, वीतराग भगवान द्वारा कथित तत्त्वों को जानकर ह्न ऐसा कहा है; परन्तु रागी-अज्ञानियों ने जो तत्त्व कहे हैं, उन्हें जानकर ह्न ऐसा नहीं कहा। यहाँ तत्त्वार्थसमूह शब्द है न ! अर्थात् जीव, अजीव, पुण्य-पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष ह्न यह तत्त्वार्थसमूह है और उसको जिनपति के मार्ग द्वारा प्रतिपादित किये गये तत्त्वार्थ समूह को जानने की बात कही है।

देखो यहाँ पहले जानने की बात कही है। अरे ! पहले जाने तो सही कि आत्मा शुद्ध है, रागादि अशुद्ध है, कर्म जड़ है और शरीर-वाणी भी जड़ है, इसलिये उनका और मेरा कोई संबंध नहीं है। इसीप्रकार पैसा, स्त्री, पुत्र इत्यादि का और मेरा कुछ संबंध नहीं है; क्योंकि वे सब तो जड़ और जगत की अन्य वस्तु (अजीव) है। अहा ! वे सभी द्रव्य तो अपनेरूप/जड़रूप होकर रह रहे हैं; जीवरूप होकर नहीं। यह शरीर, शरीर की अवस्थारूप/जड़रूप होकर रह रहा है; आत्मा की पर्यायरूप होकर नहीं । इसीप्रकार पैसा भी अजीवरूप होकर रह रहा है; वह कोई आत्मा की दशारूप होकर नहीं रह रहा है । अत: यहाँ कहते हैं कि जो जैसे होकर रहा है, उसको वैसे भली-भाँति जानना चाहिये। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

छहढाला प्रवचन

प्रयोजनभूत तत्त्वों के श्रद्धान में भूल

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिनमांहि विपर्ययत्व।
चेतन को है उपयोगरूप, चिन्मूरति विनमूरति अनूप।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे...)

सर्वज्ञदेव ने जीव को सदा उपयोगलक्षणरूप देखा है। आत्मा का स्वरूप उपयोगमय है। ऐसा उपयोगस्वरूप शुद्ध आत्मा जिसने अपने ज्ञान में नहीं देखा, वह जीव तत्त्वों में कहीं न कहीं भूल करेगा; और जहाँ भूल होगी, वहाँ दुःख होगा। इसप्रकार मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-आचरण दुःखरूप है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र सुखरूप है।

- मैं स्वयं कैसा हूँ - यह जाने बिना जीव अपने में स्थिर कैसे होगा?
- अजीव को अजीवरूप जाने बिना उससे भिन्नता कैसे करेगा?
- दुःख का कारण कौन है, उसको जाने बिना उसका त्याग कैसे करेगा?
- और मोक्ष पूर्ण सुखरूप है, उसको जाने बिना उसके लिये प्रयत्न कैसे करेगा?

इसप्रकार सुख व उसका उपाय तथा दुःख व उसका कारण, इनका ज्ञान करने के लिये सात तत्त्वों को पहचानना जरूरी है।

यदि अजीव को जीव मान लेगा तो उसमें से अपने उपयोग को कैसे हटायेगा?

शुभ-अशुभ आस्रवों को यदि संवर मान लेगा तो उसको कैसे छोड़ेगा ?

यदि अजीव-देहादि की क्रिया को अपनी मानेगा तो उससे भिन्न आत्मा का अनुभव कैसे करेगा?

सम्यग्दर्शनपूर्वक शुद्धता ही सच्चा संवर है, उसको न जानकर यदि देह की क्रिया को संवर मानेगा या राग को संवर मानेगा तो उससे भिन्न अपने आत्मा का अनुभव कैसे करेगा?

ऐसे तत्त्वों के यथार्थ ज्ञान के बिना मिथ्यात्व नहीं मिटता । अतः श्रीगुरु कहते हैं कि हे जीव ! तेरा स्वरूप भगवान ने जैसा कहा है वैसा तू जान। इसको जाने बिना तेरी भूल नहीं छूटेगी और भ्रमण नहीं मिटेगा । आत्मज्ञान के बिना बहुत शुभभाव करके

जब स्वर्ग में गया तब भी साथ में अगृहीत मिथ्यात्व को ले गया, इसकारण वहाँ भी दुःखी ही हुआ। आत्मज्ञान के बिना कहीं भी सुख का स्वाद नहीं आता।

उपयोग अर्थात् देखना-जानना, वही चेतन का रूप है। शरीर तो अजीव है, जड़ है, रूपी है; वह कुछ नहीं जानता। उपयोग लक्षण के द्वारा आत्मा देह से भिन्न अनुभव में आता है। अमूर्त आत्मा सबको जाननेवाला है। ज्ञानभाव को पुण्यपाप रूप मानना या देहरूप मानना ही मिथ्यात्व है। जीव को उपयोगरूप न मानकर, अजीवरूप या आस्रवरूप माना यही विपरीत श्रद्धान है। अज्ञानी जीव तत्त्वों का सच्चा स्वरूप न पहचानकर उनको एक-दूसरे में मिला देता है। जाननेवाला चेतनतत्त्व जड़ की भी क्रिया करे ह्न यह कैसे हो सकता है? उपयोग की क्रिया जड़रूप कैसे होवे? - कभी नहीं हो सकती। चेतनरूप आत्मा में वर्ण-गन्ध-स्पर्शरूप मूर्तपना नहीं है, वह तो उपयोगरूप अमूर्त है, अतीन्द्रिय है; ऐसे आत्मा की पहचान से ही सम्यग्दर्शन होता है और मिथ्यात्व मिटता है। अतः श्रीगुरुओं ने उसका स्वरूप समझाया है।

हे भाई ! सर्वज्ञभगवान ने सभी आत्माओं को सदा उपयोगस्वरूप देखा है, वह अजीव या शरीररूप कैसे होगा ? आत्मा अपना उपयोगरूप छोड़ करके कभी भी जड़रूप नहीं होता। अतः ऐसा भेदज्ञान करके तू प्रसन्न हो और देह से भिन्न आत्मा को अनुभव में ले ह्न इसप्रकार सर्वज्ञदेव के देखे हुए उपयोगरूप आत्मा को जो जानते हैं उनको सभी तत्त्वों का सच्चा ज्ञान हो जाता है और विपरीतता दूर हो जाती है। उपयोगरूप आत्मा अजीव नहीं है; अतः वह अजीव की क्रिया नहीं करता।

प्रश्न : अजीव का चलना-फिरना-बोलना ह्न यह तो जीव ही करता है न? क्योंकि अजीव में तो कोई शक्ति नहीं होती।

उत्तर : ऐसा नहीं है; अजीव में भी उसकी अनन्त शक्तियां हैं और अपनी क्रियाएँ वह स्वयं अपनी शक्ति से करता है। प्रत्येक जड़-रजकण में उसके अनन्त जड़-गुण विद्यमान हैं और उसकी ही शक्ति से उसमें स्वयं रूपान्तर होकर चलना-फिरना-बोलना आदि क्रियाएँ होती रहती हैं। स्थिर रहना, मौन रहना भी उसकी ही क्रियायें है। जीव उनको नहीं करता। इसप्रकार जीव-अजीव को भिन्न-भिन्न समझना चाहिए। जीव-अजीव को सर्वथा भिन्न पहचानने से सम्यक्-श्रद्धान होकर वीतराग विज्ञान प्रगटता है।

जगत् में भिन्न-भिन्न अनन्त जीव हैं; जीव से अनन्तगुणे पुद्गल हैं; असंख्यात् कालाणु हैं; धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व आकाश ह्न ये एक-एक द्रव्य हैं। इन

छह प्रकार के द्रव्यों में से जीव को छोड़कर अन्य पाँच अजीव हैं; और पुद्गल को छोड़कर शेष पाँच अमूर्त हैं। जगत् में ये छहों प्रकार के द्रव्य सर्वज्ञदेव ने स्वतंत्र भिन्न-भिन्न देखे हैं; उनको स्वतंत्र न मानकर पराधीन मानना सर्वज्ञ पर अविश्वास करना है अर्थात् तत्त्वश्रद्धान में विपरीतता है। छह द्रव्य के अस्तित्वरूप जो यह विश्व है, उसका कोई कर्ता-हर्ता-धर्ता नहीं है। कर्ता = उत्पादक; हर्ता = नाशक; धर्ता = धारण करनेवाला; द्रव्य स्वयं अपने उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य भाव से अपनी अवस्था का कर्ता-हर्ता व धर्ता है, दूसरा कोई न उसका कर्ता है, न हर्ता है और न धर्ता।

छहों द्रव्यों में से एक आत्मा ही उपयोगरूप है, इसलिये आत्मा ही अनुपम है। अहो। जो सर्वज्ञस्वभावी महान पदार्थ है उसको किसकी उपमा दी जाये? अनादिकाल से आत्मा में ही सर्वज्ञस्वभाव है, अन्य किसी में भी ऐसा स्वभाव नहीं है; शरीर में नहीं, राग में भी नहीं। आत्मा अलौकिक चीज है, उसके स्वभाव को अन्य कोई बाह्य पदार्थ की उपमा नहीं दी जा सकती, वह तो अपने स्वभाव से ही जाना जाता है। ऐसे आत्मा को जब स्वानुभव से जाने तभी सम्यग्दर्शन होता है।

सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान या सम्यक्चारित्र नहीं होता। सम्यग्दर्शन से रहित सभी शुभ क्रियाएँ बिना इकाई के शून्य समान हैं, धर्म में उनका कोई मूल्य नहीं। जिसप्रकार चक्षु से रहित मनुष्य की शोभा नहीं होती, उसीप्रकार उपयोगस्वरूप निजात्मा को जानने-देखने वाले सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान रूपी नेत्र जिसके नहीं खुले हैं, उस अन्धे की (ज्ञानांध की) शुभ क्रियाएँ भी धर्म के लिये शोभा नहीं देतीं अर्थात् धर्म का कारण नहीं होतीं; अपितु संसार का ही कारण होती हैं। जो अपने को न देखे, न जाने, उसे धर्म कैसा? उसके तो सम्यक्त्वरूपी नेत्र ही नहीं खुले।

जीवादि सात तत्त्वों को शुद्धात्मदृष्टिपूर्वक जानना चाहिए; जैसे - अजीव का ज्ञान ऐसा करना कि उसमें मैं नहीं हूँ, वह मेरे से भिन्न है। उसी तरह राग को जानते समय उससे चैतन्य की भिन्नता समझना चाहिए। ऐसे भेदज्ञानपूर्वक जाने, तभी तत्त्वों का सच्चा ज्ञान होता है; किन्तु जो शरीर या राग को आत्मा का स्वरूप मान ले, उसको तत्त्व का सच्चा ज्ञान नहीं होता। जीव और अजीव ह्न ये दो मूलभूत तत्त्व हैं और शेष तत्त्व उनकी अशुद्ध या शुद्ध पर्याय हैं। इन सात तत्त्वों की पहचान करनेवाला जीव अपने को अजीव से भिन्न उपयोगस्वरूप जानता है; अतएव अजीव के साथ एकता

(शेष पृष्ठ 27 पर ...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : प्रश्न : सीमंधर का अर्थ क्या है ? क्या आत्मा सीमंधर है ?

उत्तर : सीमंधर अर्थात् मर्यादावाली वस्तु । प्रभु ! तू मर्यादित है, तेरी सीमा ह्न तेरी मर्यादा यह है कि तू राग में न जावे, राग को न करे, अपने त्रिकाली अकषायी नीराग स्वरूप में ही रहे। अत: मर्यादा का, सीमा का धारक आत्मा स्वयं ही सीमंधर है।

प्रश्न : द्रव्यस्वभाव में विकार है ही नहीं तो कारणपरमात्मा को पापरूपी बहादुर शत्रुसेना का लूटनेवाला क्यों कहा ?

उत्तर : यह तो पर्याय से बात की है। पर्याय में रागादिभाव हैं, वे स्वभावसन्मुख ढलने पर उत्पन्न ही नहीं होते, ऐसी स्थिति में उन्हें नाश किया ह्न ऐसा कथनमात्र किया जाता है। द्रव्यस्वभाव में तो रागादिभाव अथवा सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र, केवलज्ञान या सिद्धपर्यायादि कोई भी पर्याय है ही नहीं। संसार-मोक्ष तो सब पर्यायों का खेल है, द्रव्यस्वभाव में ये पर्यायें हैं ही नहीं। त्रिकाली द्रव्यभाव एकरूप है; उसे न तो कुछ ग्रहण ही करना है और न कुछ छोड़ना ही है। ज्ञायकभाव तो शाश्वत ही है। तीन कषायों का अभाव करके अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद लेनेवाले दिगम्बर संतों ने अन्तर की बात अजब-गजब की की है। ऐसी बात दिगम्बर संतों के अतिरिक्त भरतक्षेत्र में अन्यत्र कहीं है ही नहीं। वे कहते हैं कि सभी जीव सुखी होवें, कोई जीव दु:खी न होवे, सभी जीव मुक्त दशा को प्राप्त करें, प्रत्येक आत्मा मुक्तस्वभावी ही है।

प्रश्न : त्रिकाली आत्मद्रव्य के आश्रय से ही धर्म होता है ह्न इसका क्या कारण है?

उत्तर : त्रिकाली आत्मद्रव्य ही मूलवस्तु है, उसी में आनन्द भरा है; इसलिये त्रिकाली द्रव्य का आश्रय लेने पर पर्याय में आनन्दरूपधर्मदशा प्रगट होती है।

प्रश्न : ध्रुव का मूल्य अधिक है या पर्याय में आनन्द के अनुभव का ?

उत्तर : ध्रुव का मूल्य अधिक है। आनन्द की पर्याय तो एक समय की है, जबकि ध्रुव में आनन्द का कोश भरा है।

प्रश्न : यदि द्रव्य की प्रसिद्धि पर्याय से होती हो, तो द्रव्य से पर्याय ऊँची हो गई ?

उत्तर : द्रव्य की प्रसिद्धि भले ही पर्याय करती है, फिर भी पर्याय है तो एक समय की ही न ? द्रव्य तो अनन्त-अनन्त पर्यायों का पिण्ड प्रभु है, उसकी ही महिमा है। यद्यपि एकसमय की पर्याय की भी महिमा है कि वह एकसमय में तीनकाल ह्न

तीनलोक के पदार्थों को जानती है ह्न यह सत्य है; तथापि द्रव्य तो उससे अनन्तगुणी पर्यायों का पिण्ड है; इसलिये पर्याय की अपेक्षा द्रव्य की अनन्तगुणी महिमा है। ऐसे द्रव्य की महिमा दृष्टि में आये तो पर्याय में आनन्द का वेदन होवे।

प्रश्न : द्रव्य में पड़ा हुआ आनन्द काम में अर्थात् भोगने में नहीं आता; जबकि पर्याय का आनन्द भोगने में आता है ह्नऐसी स्थिति में पर्याय का मूल्य बढ़ा या नहीं?

उत्तर : पर्याय में भोगने में आनेवाला आनन्द एक क्षणवर्ती होता है और द्रव्य तो त्रिकाली आनन्द का पिण्ड है। द्रव्य में से क्षण-क्षण आनन्द का प्रवाह आता है, इसलिये द्रव्य आनन्द का सागर है। आनन्द के सागर का मूल्य अधिक है।

प्रश्न : आप कहते हैं कि ज्ञान की पर्याय ध्रुव को जानती है, ध्रुव स्वयं कुछ नहीं जानता; तो क्या ध्रुव अन्धा है ?

उत्तर : ध्रुव अन्धा नहीं है, बल्कि महाप्रभु है। ध्रुव जानने की अन्वयशक्तियों का महापिण्ड प्रभु है। पर्याय व्यक्त है ह्न प्रगट है; अत: ध्रुव को जानती है।

प्रश्न : जीव शुद्धस्वरूपी है ह्नयह तो ठीक है; परन्तु राग-द्वेष, मोह, सुख-दु:ख के परिणामों को कौन करता है और कौन भोगता है ?

उत्तर : जीव ही राग-द्वेष-मोह के परिणामों को करता है, सुख-दु:ख एवं हर्ष-शोक को भोगता है; किन्तु वे विभाव परिणाम हैं, उपाधिभाव हैं; अत: जीव के स्वरूप का विचार करने पर वे जीव का स्वरूप नहीं हैं ह्न ऐसा कहा जाता है तथा शुद्धस्वरूप के अनुभव में विभाव नहीं आता, इसलिये स्वभावदृष्टि से विभाव आत्मा से भिन्न है।

(पृष्ठ २५ का शेष...)

बुद्धि छोड़कर शुद्ध जीवस्वभाव का आश्रय करके मिथ्यात्वादि आस्रव-बन्ध को छोड़ता है और सम्यक्त्वादिरूप संवर-निर्जरा-मोक्षदशा प्रगट करता है। यही सात तत्त्वों के ज्ञान का फल है; अतएव मुमुक्षु को सात तत्त्व का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। जीव ने अनादिकाल से सात तत्त्वों को यथार्थरूप से नहीं जाना। यह तो वीतराग वाणी में आई हुई प्रयोजनभूत बात है। सात तत्त्व में उपयोग स्वरूप जीव मैं हूँ - ऐसी अनुभूति करने से मिथ्यात्व छूटकर सम्यक्त्व होता है।

मैं कौन हूँ और मेरा सच्चा स्वरूप क्या है? इसका सच्चा विचार भी जीव ने कभी नहीं किया। जिसको चार गति के घोर दु:खों से छुटकारा पाना हो उसको अपने अन्दर में उपयोगस्वरूप आत्मा का विचार करके उसकी पहचान करना चाहिए। शास्त्रकारों ने करुणा करके यही स्वरूप समझाया है। ●

११ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन बापूनगर में दिनांक 5 से 14 अक्टूबर, 08 तक ग्यारहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रतिदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत गुरुदेवश्री के परमात्मप्रकाश ग्रंथ की गाथा 130 पर हुये सी.डी. प्रवचनों से होती थी।

शिविर का उद्घाटन रविवार, 5 अक्टूबर को प्रात: श्री प्रकाशचंदजी घीसालालजी छाबड़ा, सूरत के करकमलों से हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अभयकरणजी सेठिया, सरदारशहर के अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट अतिथी एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका भी मंचासीन थे।

शिविर के **मुख्य आमंत्रणकर्त्ता** श्रीमती सूरजदेवी धर्मपत्नी श्री जमनालालजी सेठी जयपुर तथा **आमंत्रणकर्त्ता** श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री राजमलजी अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे। शिविर के परम सहायक बनने का सौभाग्य श्रीमती मंजुलाबेन कविनचंद्र परीख मुम्बई तथा श्री मुकेशजी जैन देवलाली/इन्दौर को मिला।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर व प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़ परिवार के करकमलों से किया गया। फिल्म प्रोजेक्टर का उद्घाटन श्रीमती इन्द्राबेन जयन्तीभाई दोशी ने किया।

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की बहुमुखी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। अन्य विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिविरों की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना से लेकर आजतक चल रही गतिविधियों का उद्देश्य एकमात्र तत्त्वप्रचार ही बताया।

सभा का संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

मुख्य प्रवचन ह्न शिविर में प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 34 वीं से 37 तक मार्मिक प्रवचन हुये। आपके प्रवचन से पूर्व एक-एक दिन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि कालीन मुख्य प्रवचनों में पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। आपके

प्रवचनों के पूर्व एक-एक प्रवचन पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित फूलचंदजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन का हुआ।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के बाद महाविद्यालय के छात्रों के विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

शिक्षण कक्षायें ह्न पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा नयचक्र (व्यवहारनय प्रश्नोत्तर), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा प्रवचनसार (गाथा-80), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा तत्त्वार्थसूत्र (अध्याय ह्न6), पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा चार अभाव पर कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: ५-३० बजे) ह्न पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा का लाभ मिला।

विशिष्ट कार्यक्रम ह्न दोपहर में 1:30 से 2 बजे तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन चले। दोपहर में **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर पंच दिवसीय **प्रथम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी** आयोजित की गई।

9 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्नातक परिषद का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन एवं 12 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 30 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया।

सांयकालीन बालकक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में हुआ।

शिविर में आयोजित चौंसठ ऋद्धिविधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री सुशीलकुमार अनिलकुमार प्रदीपकुमारजी रपरिया कोलकाता, श्री दलीचंदजी जवरचंदजी हथाया घाटाकोपर-मुम्बई, श्रीमती तेजप्रभा मातुश्री कमलकुमारजीबड़जात्या मुम्बई, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी एवं सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी कोलकाता थे।

14 अक्टूबर को प्रात: शिविर के समापन समारोह में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। शिविर में लगभग 1280 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर लगभग 85322 रुपयों का सत्साहित्य तथा 15480 घंटों के डी.वी.डी. व सी. डी. घर-घर पहुँचे। वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक के अनेक नवीन सदस्य बनें। ●

छात्र प्रवेश फॉर्म आमंत्रित

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-४, बापूनगर, जयपुर ह्न ३०२०१५ (राज.) की जनवरी २००९ में आयोजित होनेवाली शीतकालीन परीक्षाओं के खाली छात्र प्रवेश फॉर्म संबंधित परीक्षा केन्द्रों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। कृपया शीघ्र भरकर भिजवा देवें। जिनको डाक की गड़बड़ी से प्रवेश फॉर्म नहीं मिले हों, वे कृपया तत्काल परीक्षा बोर्ड कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लेवें। **ह्न ओ. पी. आचार्य, प्रबंधक, परीक्षा बोर्ड**

प्रथम राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी आयोजित

ग्यारहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के दौरान दिनांक 6 से 11 अक्टूबर तक **जैन अध्यात्म को हुकमचंदजी भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कुल 13 वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किये।

प्रथम दिवस ह्न संगोष्ठी के प्रथम दिन प्रथम वक्ता डॉ. भागचंदजी जैन, कार्डिनेटर ह्न महावीर पब्लिक स्कूल जयपुर ने **भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ ह्न डॉ. भारिल्ल की दृष्टि में** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

आपके पश्चात् द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित प्रमोदकुमार जी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल की कृति **पश्चाताप** को आधार बनाकर **तर्क की कसौटी पर पश्चाताप** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रस्तुत कृति में पुरातन व अधुनातन न्याय व्यवस्था को आधार बनाकर तर्कों का प्रयोग किया गया है एवं महामानव राम को मानवराम की दृष्टि से दखने का प्रयास किया गया है।

गोष्ठी की अध्यक्षता **डॉ. अनिल जैन - विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय** ने की। उन्होंने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल मात्र एक व्यक्ति नहीं है; अपितु वे एक संस्था हैं। वे एक नदी नहीं; अपितु भागीरथ हैं, जो अपने पीछे पूरी गंगा को बहाकर ले जाते हैं।

द्वितीय दिवस ह्न दिनांक 7 अक्टूबर को गोष्ठी के द्वितीय सत्र का आयोजन डॉ. संजीव जी भानावत ह्न अध्यक्ष, जनसंचार केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में किया गया।

गोष्ठी के इस सत्र में प्रथम वक्ता के रूप में श्री अरुण शास्त्री ने **डॉ. भारिल्ल की कहानियों का प्रतिपाद्य** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल की कहानियों का उद्देश्य कथावस्तु का ताना-बाना लेकर आध्यात्मिक ज्ञान परोसना है। आपने डॉ. भारिल्ल को मूर्धन्य मनीषी व सशक्त लेखक सिद्ध करते हुये कहा कि तत्त्व की प्रतिपादक कहानियाँ आपकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा है।

द्वितीय वक्ता के रूप में डॉ. नीतेश शाह ने **बारह भावना** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल के काव्य में मात्र भक्ति का पुट ही नहीं है; अपितु आपका काव्य अध्यात्मरस से सराबोर है। उनके द्वारा लिखित बारह भावनायें श्रोताओं का ध्यान बरबस ही आकर्षित कर लेती हैं। डॉ. भारिल्ल का साहित्य मात्र रचनायें नहीं; अपितु अंतर्मन से निकले हुये उद्गार हैं। आपका साहित्य जाति व धर्म के बंधनों से रहित है तथा समाज के लिये उचित मार्गदर्शक हैं।

तृतीय वक्ता के रुप में डॉ. संजयजी दौसा ने **डॉ. भारिल्ल की प्रवचन कला** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि वे कलम के साथ ही वाणी के भी धनी हैं, लोकप्रिय साहित्यकार होने के साथ-साथ ही लोकप्रिय प्रवचनकार के रूप में भी सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं।

गोष्ठी के इस सत्र के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये डॉ. भानावत ने सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार की विशेषताओं को उजागर करते हुये डॉ. भारिल्ल को सर्वश्रेष्ठ प्रवचनकार के साथ सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार भी सिद्ध किया।

तृतीय दिवस ह्न गोष्ठी के तृतीय सत्र का आयोजन 8 अक्टूबर को **डॉ. पी. सी. जैन ह्न अध्यक्ष, जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय** की अध्यक्षता में किया गया।

इस अवसर पर प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. महावीरप्रसाद शास्त्री ने **डॉ. भारिल्ल का बाल साहित्य** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल ने बालकों में अध्यात्म का बीज बोने हेतु बालबोध, वीतराग-विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान पाठमालाओं की रचना की हैं। आपने बालकों को संस्कारित करने हेतु कुल 31 एकांकियों की रचना की, जिनमें से अनेकों को रंगमंच पर प्रदर्शित किया जा चुका है।

द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका ने **जैन साहित्य में डॉ. भारिल्ल की तार्किक शैली** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि आपके साहित्य में तार्किक विश्लेषण की शैली दृष्टिगोचर होती है। आपने साहित्य के माध्यम से जैनदर्शन को समझने की नई दृष्टि समाज को प्रदान की है तथा सामान्यजन तक अध्यात्म को पहुँचाने में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की है।

तृतीय वक्ता पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी ने **पश्चाताप में सीता चरित्र : एक अध्ययन** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल द्वारा मात्र 17 वर्ष की अल्पवय में लिखी गई इस कृति में सीता के माध्यम से नारी का चरित्र चित्रण मार्मिक ढंग से किया गया है।

गोष्ठी के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये डॉ. पी.सी.जैन ने कहा कि डॉ. भारिल्ल का चिंतन इतना विस्तृत है कि उनकी एक-एक कृति को लेकर एक-एक संगोष्ठी आयोजित की जा सकती है। साहित्य व वाणी के माध्यम से तत्त्वप्रचार के लिये रत रहने वालों में डॉ. भारिल्ल का नाम सर्वोपरि है।

चतुर्थ दिवस ह्न संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता **डॉ. पी. सी. रांवका ह्न प्रोफेसर-भाषा विज्ञान, बीकानेर संस्कृत कॉलेज** ने की।

इस सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. महेश जैन भोपाल ने **डॉ. भारिल्ल का अध्यात्म के क्रियान्वन में योगदान** विषय पर अपना आलेख पत्र प्रस्तुत किया। आपने अपने पत्र में बताया कि किसी भी क्षेत्र में कार्य के सम्पूर्ण सम्पादन व क्रियान्वन की जैसी दृष्टि आपके पास है, वैसी अन्य किसी के पास होना दुर्लभ है। आपने बताया कि आज के समय में घर-घर में सत्साहित्य व स्वाध्याय की उपलब्धता तथा आध्यात्मिक शिविरों के माध्यम से तत्त्व का प्रचार-प्रसार आपकी ही कार्यशैली की देन है।

द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने **नयचक्र में डॉ. भारिल्ल का मौलिक चिंतन** विषय पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत करते हुये बताया कि समाज

में विरोध का कारण अज्ञान है तथा ऐसे समय में इस अज्ञान को दूर करके ही समाज में एकता लाई जा सकती है ह्न इस एकता के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही डॉ. भारिल्ल ने **नयचक्र** ग्रंथ की रचना की। आपने कहा कि डॉ. भारिल्ल की वक्तृत्व व लेखन दोनों ही शैलियों में मौलिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। अपने मौलिक विचारों के द्वारा आपने सहज, सरल व व्यवहारिक ढंग से समस्याओं का समाधान किया है।

अंतिम वक्ता के रुप में डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली ने **डॉ. भारिल्ल की रीति-नीति पर महात्मा गाँधी व कानजीस्वामी का प्रभाव** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि गाँधीजी व स्वामीजी की भाँति ही आप भी अपने जीवन में सत्य की कीमत पर कभी नहीं झुके। दोनों महापुरुषों की भाँति आपने भी अपने उपदेश में आध्यात्मिक सत्य की ही स्थापना की है। आपने बताया कि जहाँ आपकी रीति में कानजीस्वामी के कोमलस्पंदन की अनुभूति होती है वहीं आपकी नीति में गाँधीजी की अहिंसामयी कार्यशैली का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है।

गोष्ठी के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये **डॉ. रांवका** ने डॉ. भारिल्ल की कृतियों की प्रशंसा करते हुये वास्तविक अध्यात्म को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उनका आभार माना तथा उनके इस कार्य तथा कार्यशैली की प्रशंसा की।

पंचम दिवस ह्न 11 अक्टूबर को संगोष्ठी के अंतिम सत्र का आयोजन **डॉ. बी. एल. सेठी ह्न अध्यक्ष, इतिहास विभाग, मोतीलाल कॉलेज, झुंझुनू** की अध्यक्षता में किया गया।

इस सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई ने **धर्म के दशलक्षण** कृति पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने अपने वक्तव्य में कहा कि डॉ. भारिल्ल ने अपने साहित्य के माध्यम से जैन आध्यात्मिक साहित्य के गौरव को बढ़ाया है। ●

(पृष्ठ ३४ का शेष...)

डॉ. साहब के चिंतन में जो भी योजना जन्म लेती है, वह अत्यंत दूरगामी एवं उपयोगी होती है।

मैं स्नातक परिषद् के सदस्यों से अपेक्षा रखता हूँ कि वे पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों पर एवं डॉ. साहब द्वारा विरचित समयसार, प्रवचनसार की टीकाओं पर आधारित परिचर्चा, तत्त्वगोष्ठी आदि का आयोजन करें।

कार्याध्यक्ष शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिसप्रकार हाथ की सभी अंगुलियाँ बराबर नहीं होती, लेकिन मुट्ठी बांधने में और उसकी मजबूती में प्रत्येक अंगुली का अपनी योग्यतानुसार पूर्ण योगदान रहता है; उसीप्रकार हम सभी की योग्यता एक सी नहीं हो सकती है, लेकिन हम सभी यदि अपनी योग्यतानुसार योगदान देंगे तो निचित ही यह संगठन मजबूत होगा और अपने तत्त्वप्रचार के उद्देश्य में सफल हो सकेगा।

अधिवेशन हेतु आये लगभग 225 स्नातक विद्वानों की उपस्थिति से उत्साह का वातावरण रहा। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के महामंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया। ●

३० वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

ग्यारहवें शिक्षण-शिविर के दौरान रविवार, दिनांक 12 अक्टूबर को **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 30वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया।**

अधिवेशन का उद्घाटन श्री श्रेयांसकुमारजी कोलकाता ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री कपूरचंदजी डैडी भोपाल थे। अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने की, वे फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के पश्चात् पहली बार जयपुर पधारे। इस अवसर पर उनका विशेष स्वागत किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष श्री आदीशजी जैन, श्री रजनीभाई लाखानी राजकोट, श्री मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, श्री सुरेशजी बालचंदजी पाटनी कोलकाता, श्री अशोकजी कोलकाता, श्री दिलीपभाई अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट आदि उपस्थित थे।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल आदि समस्त विद्वान भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल अजमेर ने सभा को संबोधित करते हुये कोटा के संभागीय अधिवेशन एवं किशनगढ में किये गये एक दिवसीय फैडरेशन कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर की जानकारी देते हुये इसे सभी प्रदेशों को अपनाने की प्रेरणा दी।

राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने उदयपुर संभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में बताते हुये दीपावली को अहिंसा पर्व के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा। इसे उपस्थित जन समुदाय ने करतल ध्वनिपूर्वक स्वीकार कर लिया। इसके फार्म का विमोचन डॉ. भारिल्ल के कर-कमलों से हुआ।

संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने दिसम्बर माह मे आयोजित होनेवाली बुन्देलखण्ड यात्रा की जानकारी दी तथा श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन को 21वीं सदी की आधुनिक तकनीकों से जोडने की बात करते हुये शिक्षण पद्दति की अनेक नवीन योजनाओं की जानकारी दी, जिन्हें वे मुम्बई महानगर में सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं।

राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जयपुर प्रभारी श्री संजीवकुमारजी गोधा ने जयपुर महानगर में चल रही फैडरेशन की गतिविधियों की जानकारी दी। भिण्ड से पधारे श्री पुष्पेन्द्रजी जैन ने ग्रुप शिविरों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस प्रसंग पर परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने फैडरेशन के सदस्यों को अपने तत्त्वप्रचार-प्रसार पूर्वक आत्मानुभूति के लक्ष्य को सदैव स्मरण रखने की बात पर बल दिया।

अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई मोटानी, मुम्बई ने सभी कार्यकर्त्ताओं का आभार मानते हुये फैडरेशन को और अधिक सक्रिय बनाने का आह्वान किया।

डॉ. भारिल्ल ने अधिवेशन में पूरे देश से पधारे सभी कार्यकर्त्ताओं को फैडरेशन द्वारा चलाये जा रहे ज्ञानयज्ञ में जुडने हेतु अपना आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया।

टोडरमल स्नातक परिषद् का प्रथम अधिवेशन

11 वें शिक्षण-शिविर के दौरान रविवार, 9 अक्टूबर को कार्यकारिणी की बैठक एवं **पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन** दो सत्रों में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ पं.मनीषजी शास्त्री पिडावा के मंगलाचरण से हुआ। मंचासीन अतिथियों के स्वागत के बाद पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् **ट्रस्ट** के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्नातक परिषद् के गठन की आवश्यकता/उद्देश्य/स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये कहा कि ह्न

पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से संचालित महाविद्यालय का संचालन 1977 से प्रारंभ हुआ था और इसे चलते हुये आज 31 वर्ष हो गये हैं। अब तक इसके 27 बैच के लगभग 550 छात्र निकलकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इन सब में परस्पर संवाद स्थापित हो, सभी परस्पर मिलकर तत्त्वप्रचार के कार्य में अधिक से अधिक योगदान कर सकें ह्न इस उद्देश्य से इस संस्था का गठन किया गया है।

आपने आगे कहा कि तत्त्वप्रचार के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका विद्वान ही निभाते हैं। अत: विद्वानों की इस स्नातक परिषद् का उद्देश्य तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करना ही है।

इस अवसर पर आपने सभी छात्रों को वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक का नि:शुल्क सदस्य बनाने की घोषणा की; ताकि सभी छात्रों से संवाद स्थापित करना सुलभ रहे और और कहा कि भविष्य में सभी पत्राचार इन्हीं पत्रों के माध्यम से किये जायेंगे। साथ ही संस्था द्वारा समय-समय पर प्रकाशित साहित्य भी छात्रों को नि:शुल्क भेजा जायेगा। तत्पश्चात् नवगठित प्रथम कार्यकारिणी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये परिषद् के उपाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी झाँझरी ने इस परिषद् की स्थापना को महाविद्यालय की स्थापना जैसी ही अद्भुत् एवं युगान्तरकारी घटना बताया। उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी तन्मय विदिशा ने भी अपने उद्बोधन में इस घटना को चिरप्रतीक्षित आवश्यकता की पूर्ति के रूप उठया गया एक महत्त्वपूर्ण कदम बताते हुये कहा कि इस संस्था के गठन के दूरगामी सार्थक परिणाम होंगे। पण्डित राजकुमारजी बाँसवाड़ा ने डॉ. भारिल्ल के मार्गदर्शन में गठित इस परिषद् के माध्यम से महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों के रिफेसर कोर्स एवं विषय केन्द्रित शिविरों के आयोजन का प्रस्ताव रखा।

इनके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, डॉ. महावीरजी उदयपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती स्वानुभूति जैन मुम्बई, डॉ. महेशजी जैन भोपाल, पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री ऋषभजी शाह अहमदाबाद, डॉ. विमलजी जैन जयपुर, डॉ. भागचंदजी जैन जयपुर, पण्डित सुशीलकुमारजी भोपाल, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर इत्यादि वक्ताओं ने दो सत्रों में अपने विचार व्यक्त किये।

अध्यक्षीय उद्बोधन में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने कहा कि **(शेष पृष्ठ 32 पर ...)**